हिन्दुस्तान
20.03.2019

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के उपलक्ष्य में एफआरआई में कार्यशाला का आयोजन

वनों को शिक्षा से जोड़ना होगा : चंडी प्रसाद

जागरूकता

देहरादून | कार्यालय संवाददाता

कार्यशाला

- पद्म भूषण चंडी प्रसाद भट्ट ने किया कार्यक्रम को संबोधित
- वन सचिव ने कहा, सिर्फ संरक्षण दिवस मनाकर नहीं होगा काम

अगर वनों का संरक्षण करना है तो सिर्फ लोगों को जागरूक करने से कुछ नहीं होगा। सरकारों और अधिकारियों को उनसे ज्यादा जागरूक होना होगा। वन और पर्यावरण संरक्षण के नाम पर सिर्फ ऐसे दिवस मनाने से कुछ नहीं होगा। मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के उपलक्ष्य में एफआरआई में आयोजित कार्यक्रम में भारत सरकार के वन सचिव सीके मिश्रा ने यह बात कही।

बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे मिश्रा ने कहा कि हम रह साल 21 मार्च को वन दिवस मनाते हैं। लेकिन सिर्फ ऐसे दिवस मनाकर ही पर्यावरण का संरक्षण नहीं होगा। इसके लिए जमीनी स्तर पर काम करना होगा। उन्होंने कहा कि 2030 तक 3 मिलियन टन कार्बन स्टाक करने का लक्ष्य थोड़ा मुश्किल है। लेकिन सही कार्ययोजना से इसे पाया जा सकता है। मिश्रा ने कहा कि वनाग्नि रोकने के लिए आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करना होगा। इसके लिए केंद्र उत्तराखंड सहित तमाम अन्य राज्यों को पैसा देने को तैयार है। मुख्य वक्ता के रूप में आए पद्मश्री चंडी प्रसाद भट्ट ने कहा कि वनों को शिक्षा से जोड़ना होगा। जिससे लोग शिक्षित होंगे तो वन और पर्यावरण बचेगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ विज्ञान और तकनीक से वन नहीं बचेंगे, पारंपरिक ज्ञान को भी इसमें शामिल करना होगा। उन्होंने चिपको से लेकर तमाम बड़े आंदोलनों की शुरुआत और उनकी सफलता के बारे में लोगों को जानकारी दी।

वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट आफ इंडिया के निदेशक डा.वीबी माथुर ने कहा कि आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत पेपरलैस काम की है। हर दिन पेपर के लिए लाखों पेड़ काटे जा रहे हैं। अगर हर व्यक्ति या दफ्तर पेपर का इस्तेमाल कम कर दे तो वन ऐसे ही बच सकेंगे। इस दौरान श्रेष्ठ काम करने वाले वैज्ञानिकों और पर्यावरण संरक्षण के लिए आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आईसीएफआरआई के डीजी डा. एससी गैरोला, एफआरआई के निदेशक एके रावत, डीजी डा.सुभाष आशुतोष, वन मंत्रालय के एडीजी शैवाल दास गुप्ता, आईजीएनएफएन के निर्देशक ओमकार सिंह, एपीसीसीएफ डा.धनंजय मोहन आदि मौजूद रहे।

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के उपलक्ष्य में मंगलवार को एफआरआई में कार्यशाला का आयोजन किया गया। ● हिन्दुस्तान

अमर उजाला

20.03.2019

‘आमजन को जोड़कर करें जंगलों का विकास’

विशेषज्ञों ने कहा, तेजी से बढ़ती जनसंख्या और विकास गतिविधियों से बढ़ी वनों की महत्ता

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के मौके पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की ओर से मंगलवार को वन सेमिनार का आयोजन किया गया। इस दौरान विशेषज्ञों ने तेजी से बढ़ती आबादी व अंधाधुंध विकास के चलते वनों के विनाश पर चिंता जतायी। विशेषज्ञों ने आमजन को जोड़कर वनों के विकास पर जोर दिया।

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के सचिव सीके मिश्रा ने कहा कि वनों से अधिक से अधिक लोग जुड़ें इसके लिए जागरूकता की जरूरत है। जागरूकता महज जंगलों में और उसके आसपास के लोगों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि वनों के बाहर भी रहने वाले लोगों तक होनी चाहिए। उन्होंने वानिकी के प्रयासों की सराहना की।

एफआरआई में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते सचिव वन एवं पर्यावरण मंत्रालय सीके मिश्रा। अमर उजाला

मुख्य वक्ता पर्यावरणविद् एवं पद्मभूषण चंडी प्रसाद भट्ट ने कहा कि देश दुनिया में तेजी से बढ़ती जनसंख्या और विकास गतिविधियों के मद्देनजर वनों का महत्व पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ गया है। जब तक जंगलों के विनाश के कारणों और परिणामों को ध्यान में नहीं लाया जाता है तब तक परिवर्तनकारी सोच नहीं बनायी जा सकती है।

हम जंगलों के साथ अपने पुराने पारंपरिक संबंधों को भूल गए हैं। अब उन्हें पुनर्जीवित करने की तआवश्यकता है। साईबल दास गुप्ता ने पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच में संतुलन और मंत्रालय के प्रयासों की व्याख्या की। महानिदेशक डॉ. एससी गैरोला ने कहा कि वैसे तो वानिकी में वैज्ञानिक और तकनीकी विकास तेजी से हुआ है, लेकिन अब समय वानिकी के सामने आ रही चुनौतियों के तेजी से समाधान की जरूरत है।

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के मौके पर वन अनुसंधान संस्थान में कार्यशाला

सेमिनार को वन सर्वेक्षण के महानिदेशक डॉ. सुभाष आशुतोष, डब्ल्यूआईआई के निदेशक डॉ. वीवी माथुर, आईजीएनएफए के निदेशक ओमकार सिंह, वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक अरुण सिंह रावत ने संबोधित किया। मौके पर 'नेचर्स केलिडोस्कोपः बायोडायवर्सिटी ऑफ न्यू फरेस्ट कैंपस' व 'साइंटिस्ट ऑफ आईसीएफआरई' का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा थपलियाल ने किया।

वैज्ञानिक सम्मानित

सेमिनार के दौरान वानिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए वैज्ञानिकों डॉ. गिरीश चंद्रा, डॉ. विनीत कुमार, डॉ. एसएस चौहान, डॉ. पंकज अग्रवाल, डॉ. मधुमिता दास गुप्ता, और डॉ. ए. अरुणाचलम को आईसीएफआरई उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान चित्रकला, निबंध, फोटोग्राफी और वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

जैविक उत्पादों की प्रदर्शनी

सेमिनार के अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें सरकारी, गैर सरकारी संगठनों और सरकार द्वारा प्रचारित वन उत्पादों, पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकी, प्रकाशनों, कलाकृतियों, जैविक उत्पादों और अन्य आजीविका विकल्पों का प्रदर्शन किया गया।

राष्ट्रीय सहारा
20.03.2019

आम आदमी को वनों से जोड़ने की जरूरत

सहारा न्यूज ब्यूरो

अंतरराष्ट्रीय वानिकी दिवस पर एफआरआई में कार्यक्रम आयोजित

पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट ने भी की शिरकत, परिवर्तनकारी सोच पर जोर

वानिकी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वन वैज्ञानिकों का हुआ सम्मान

देहरादून। अंतरराष्ट्रीय वानिकी दिवस पर मंगलवार को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा एफआरआई में कार्यक्रम आयोजित किया गया। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रायल के सचिव सीके मिश्रा ने बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम में शिरकत की। इस वर्ष वन दिवस का थीम 'वानिकी और शिक्षाः वनों से प्रेम करना सीखें' रखा गया है। जिसका उद्देश्य सतत वन प्रबंधन व जैव विविधता संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सभी स्तरों पर शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देना है। पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट ने भी कार्यक्रम में शिरकत करते हुए वन प्रबंधन के लिए परिवर्तनकारी सोच बनाने पर जोर दिया। इस अवसर पर एफआरआई के मैंग्रो ग्रोव में प्रदर्शनी भी लगाई गई। साथ ही अतिथियों ने वनस्पति वाटिका में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करते हुए सचिव सीके मिश्रा ने आह्वान किया कि वनों से आम आदमी को प्रभावी रूप से जोड़ने के लिए शिक्षित करने हेतु पुनर्विचार किया जाए। साथ ही इस दिशा में सार्थक प्रयास करने की बात भी उन्होंने कही है। कहा कि जागरूकता केवल वन व उसके आसपास रहने वाले समुदाय तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि वनों के बाहर रहने वाले समुदायों को भी जागरूक किया जाना चाहिए। वनों की गुणवत्ता व उत्पादकता को बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास करने पर भी उन्होंने जोर दिया है। पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट ने कहा कि बढ़ती हुई जनसंख्या और उससे जुड़ी हुई विकास गतिविधियों के मद्देनजर वनों का महत्व पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ गया है। जब तक जंगलों के विनाश के कारणों व परिणामों को ध्यान में नहीं लाया जाता है तब तक परिवर्तनकारी सोच नहीं बनाई जा सकती है।

उन्होंने कहा कि हम जंगलों के साथ अपने पुराने पारंपरिक संबंधों को भूल गये हैं। इन्हें पुर्नजीवित करने की जरूरत है। वन एवं पर्यावरण मंत्रालय में अतिरिक्त महानिदेशक साईबल दास गुप्ता ने पर्यावरण संरक्षण व आर्थिक विकास के बीच में तार्किक संतुलन पर प्रकाश डाला। इससे पहले आईसीएफआरई के महानिदेशक डा. एससी गैरोला ने कार्यक्रम में शिरकत कर रहे सभी अतिथियों का स्वागत किया। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में परिषद व एफआरआई द्वारा किये जा रहे प्रयासों पर भी उन्होंने प्रकाश डाला है।

कार्यक्रम का संचालन डा. मनीषा थपलियाल ने किया। इस अवसर पर कॉफी टेबल बुक ' नेचर्स केलिडोस्कोप व साइंटिस्ट ऑफ आईसीएफआरई बायोडंाटा का विमोचन भी किया गया। साथ ही डा. गिरीश चंद्रा, डा. विनीत कुमार, डा. पंकज अग्रवाल, डा. मधुमिता दासगुप्ता, डा. एसएस चौहान व डा. ए अरुणाचलम को वानिकी में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार भी प्रदान किया गया। भारतीय वन सर्वेक्षण के महानिदेशक डा. सुभाष आशुतोष, एफआरआई के निदेशक अरुण सिंह रावत, भारतीय वन्यजीव संस्थान के निदेशक डा. वीबी माथुर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी के निदेशक ओमकार सिंह समेत विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों के अधिकारी, वन विशेषज्ञ, पर्यावरणविद्, शोधार्थी व शिक्षण संस्थानों के छात्र-छात्राएं भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

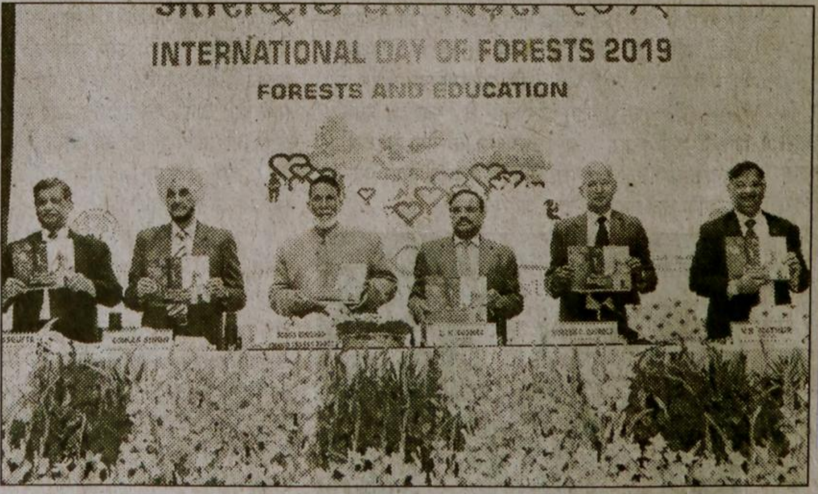

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कॉफी टेबल बुक का विमोचन करते अतिथि।

दैनिक जागरण
20.03.2019

जंगल से पारंपरिक संबंध भूल रहा मानव

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में वनों के प्रति संवेदनशील बनाने पर दिया गया जोर

जागरण संवाददाता, देहरादूनः जंगलों के साथ हम पारंपरिक संबंधों को भूलते जा रहे हैं। इसे पुनर्जीवित करने की सख्त जरूरत है। इसके साथ ही वनों के विनाश के कारणों और परिणाम पर जब तक ध्यान नहीं दिया जाता, तब तक परिवर्तनकारी सोच भी विकसित नहीं की जा सकती। यह बात पद्मभूषण चंडी प्रसाद भट्ट ने अंतरराष्ट्रीय वन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता कही।

मंगलवार को वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन सचिव सीके मिश्रा ने वनों के प्रति जनजागरूकता फैलाने की बात कही। उन्होंने कहा कि यह जागरूकता जंगलों और उसके आसपास के लोगों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। इसके दायरे में वनों से बाहर रहने वाले लोगों को भी लाने के प्रभावी प्रयास करने की जरूरत है। इस अवसर पर कॉफी टेबल बुक 'नेचर्स केलिडोस्कोपः बायोडायवर्सिटी ऑफ न्यू फॉरेस्ट कैंपस' व साइंटिस्ट्स ऑफ आइसीएफआरई बायोडाटा का विमोचन किया गया। वहीं, अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित चित्रकला, निबंध, फोटोग्राफी व वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम में वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. शैवाल दास गुप्ता, आइसीएफआरई के महानिदेशक डॉ. एससी गैरोला, एफएसआइ के महानिदेशक सुभाष आशुतोष, डब्ल्यूआइआइ के निदेशक डॉ. वीबी माथुर, आइजीएनएफए के निदेशक ओमकार सिंह, एफआरआइ निदेशक अरुण सिंह रावत आदि उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस पर एफआरआइ में कॉफी टेबल बुक का विमोचन करते पद्मभूषण चंडी प्रसाद भट्ट व अन्य ● जागरण

शाह टाईम्स
20.03.2019

वनों से आम आदमी जोड़ने के प्रयास किए जाएं: मिश्रा

■ एफआरआई में अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस 2019 को आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से मंगलवार को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के दीक्षान्तगृह में अंर्तराष्ट्रीय वन दिवस 2019 का आयोजन किया गया। सभी प्रकार के वनों के मूल्यों, महत्व और योगदान के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए, अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस दुनिया भर में मनाया जाता है।

इस वर्ष अंर्तराष्ट्रीय वन दिवस का विषय वानिकी और शिक्षा वनों से प्रेम करना सीखें' है जिसका उद्देश्य सतत वन प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सभी स्तरों पर शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य अतिथि सीके मिश्रा, सचिव, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार ने की। आईसीएफआरई को अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के आयोजन पर बधाई देते हुए तथा अतर्राष्ट्रीय वन दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मुख्य अतिथि सीके मिश्रा ने आह्वान किया कि वनों से आम आदमी को प्रभावी रूप में जोड़ने के लिए शिक्षित करने को पुनर्विचार किया जाए और इस दिशा में सार्थक प्रयास किए जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि जागरूकता केवल जंगलों में और उसके आसपास के समुदाय तक सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि वनों के बाहर भी रहने वाले समुदायों में बनाई जानी चाहिए। भारत में सम्पूर्ण वानिकी बिरादरी के प्रयासों की सराहना करते हुए, जिसमें वनों को बढ़ाने के लिए वनों के बाहर की भूमि पर पेड़ उगाने वाले लोग शामिल हैं। उन्होंने वनों की गुणवत्ता और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सभी से ठोस और समयकित प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने पारम्परिक ज्ञान में विज्ञान का उपयोग करने, व्यावहारिक रूपरेखा तैयार करने और लोगों को शिक्षित करने की सलाह दी जिससे कि इन मद्दों पर काबू पाया जा सके। समारोह को आईसीएफआरई के महानिदेशक डॉ. एससी गैरोला, प्रसिद्ध पर्यावरणविद् और पद्मभूषण चण्डी प्रसाद भट्ट, साईबल दास गुप्ता, डॉ. सुभाष आशुतोष, डॉ. वीवी माथुर और ओमकार सिंह व अरूण सिंह रावत ने भी सम्बोधित किया। मुख्य अतिथि मिश्रा ने 'कॉफी टेबल बुक शीर्षक ''नेचर्स केलिडोस्कोप: बायोडायवर्सिटी ऑफ न्यू फॉरेस्ट कैम्पस' तथा 'साईन्टिस्टस' ऑफ आईसीएफ आरई बायोडाटा' का विमोचन भी किया गया। वैज्ञानिकों डॉ. गिरीश चंद्रा, डॉ. विनीत कुमार, डॉ. एसएस चौहान, डॉ. पंकज अग्रवाल, डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, और डॉ. ए अरूणाचलम को वानिकी में उत्कृष्टता के लिए आईसीएफआरई उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया। अंर्तराष्ट्रीय वन दिवस के अवसर पर आयोजित की गई। चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता, फोटोग्राफी प्रतियोगिता और वाद विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

उत्तराखण्ड केसरी
20.03.2019

केंद्रीय वन एवं पर्यावरण सचिव बोले, सरकारी पकड़ ढीली करने पर केंद्र कर रहा मंथन

...तो समाज के हवाले हो सकता है वन प्रबंधन

देहरादून, 19 मार्च (स.ह.) : केंद्रीय वन एवं पर्यावरण सचिव सीके मिश्रा ने कहा कि केंद्र इस बात पर गंभीरता से विचार कर रहा है कि वनों के प्रबंधन में सरकार की पकड़ ढीली कर उसे समाज के हवाले किया जाए।

मिश्रा भारतीय वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) सभागार में अंतरराष्ट्रीय वन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वनों पर समुदायों की पकड़ बढ़नी चाहिए। सरकार में इस बात का मंथन चल रहा है कि लोग वनों से किस रूप और किस हद तक जुड़ें। समाज के जुड़ाव के बिना वनों का संरक्षण, संवर्धन और सुरक्षा नामुमकिन है। केंद्रीय सचिव ने कहा कि वनों के संरक्षण व संवर्धन के लिए विशुद्ध विज्ञान व परंपरागत ज्ञान के समन्वय की जरूरत है। वन संपदा को बचाना आसान नहीं है। बढ़ती आबादी का दबाव वनों पर काफी अधिक है। वन संरक्षण व विकास में समन्वय ही एकमात्र रास्ता बचता है। वन संपदा में आजीविका के अपार मौके छिपे हैं।

मुख्य वक्ता पयार्वरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट ने कहा कि बिना लोगों की सहभागिता के वन व वन्यजीव नहीं बच सकते। वन समुदायों को अधिकारसंपन्न करना वक्त की मांग है। ऐसा किए बिना वनों का बचाव नहीं हो सकता। वह बोले कि पहाड़ में पयार्वरण के विनाश के पीछे सरकारी नीतियां व माफिया है।

इस मौके पर आईसीएफआरई के महानिदेशक एससी गैरोला, वन्यजीव संस्थान के निदेशक डॉ. वीबी माथुर, अपर महानिदेशक सैबलदास गुप्ता, एफएसआई के महानिदेशक डॉ. सुभाष आशुतोष, आईजीएफएनए के निदेशक ओमकार सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। भारतीय वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एएस रावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एफआरआई के वैज्ञानिक डॉ. विनीत को मिला विशेष सम्मान

देहरादून। कार्यक्रम में आईसीएफआरई की तरफ से राष्ट्रीय पुरस्कार दिए गए। इसमें वैज्ञानिकों, छात्रों व शोध अध्येताओं को पुरस्कृत किया गया। एफआरआई के वैज्ञानिक डॉ. विनीत कुमार को विशेष तौर पर पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही डॉ. गिरीश चंद्रा, शक्ति सिंह चौहान, पंकज अग्रवाल, डॉ. मधुमिता दास गुप्ता, डॉ. ए अरुणाचलम को सम्मानित किया गया।

I-NEXT
20.03.2019

एफआरआई में वन दिवस का आयोजन

DEHRADUN (19 March): वन अनुसंधान संस्थान के दीक्षांतगृह में अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस का आयोजन किया गया. इस मौके पर सभी प्रकार के वनों के मूल्यों, महत्व और योगदान के बारे में जानकारी दी गई. इस मौके पर कहा गया कि सार्वजनिक जागरूकता बढाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस दुनिया भर में मनाया जाता है.

अध्यक्षता सीके मिश्रा, सचिव, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा की गई. प्रसिद्ध पर्यावरणविद् और मुख्य वक्ता पदम् भूषण चंडी प्रसाद भट्ट ने भी इस बारे में जानकारी दी. मुख्य अतिथि तथा कार्यक्रम में सम्मिलित सभी लोगों का स्वागत करते हुए साईबल दास गुप्ता ने पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच में तार्किक संतुलन और इस दिशा में चल रहे प्रयासों की मंत्रालय की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया. कहा कि वनों से आम आदमी को प्रभावी रूप में जोड़ने के लिए शिक्षित करने के लिए पुनर्विचार किया जाए और इस दिशा में सार्थक प्रयास किए जाएं. उन्होने यह भी कहा कि जागरूकता केवल जंगलों में और उसके आसपास के समुदाय तक सीमित नहीं होनी चाहिए.

UTTAR BHARAT LIVE
20 March, 2019

वन दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

उत्तर भारत लाइव ब्यूरो
uttarbharatlive.com

देहरदादून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से मंगलवार वन अनुसंधान संस्थान के दीक्षान्तगृह में अर्तराष्ट्रीय वन दिवस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साईबल दास गुप्ता ने पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच में तार्किक संतुलन और इस दिशा में चल रहे प्रयासों की मंत्रालय की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। आईसीएफआर ई को अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के आयोजन पर बधाई देते हुए तथा अतर्राष्ट्रीय वन दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मुख्य अतिथि सीके मिश्रा ने आह्वान किया कि वनों से आम आदमी को प्रभावी रूप में जोडने के लिए शिक्षित करने हेतु पुर्नविचार किया जाए और इस दिशा में सार्थक प्रयास किए जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि जागरूकता केवल जंगलों में और उसके आसपास के समुदाय तक सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि वनों के बाहर भी रहने वाले समुदायों में बनाई जानी चाहिए। भारत में सम्पूर्ण वानिकी बिरादरी के प्रयासों की सराहना करते हुए, जिसमें वनों को बढाने के लिए वनों के बाहर की भूमि पर पेड उगाने वाले लोग शामिल हैं, उन्होने वनों की गुणवत्ता और उत्पादकता को बढाने के लिए सभी से ठोस और समयकित प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। इस मौके पर साईबल दास गुप्ता अतिरिक्त महानिदेशक वन संरक्षण पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, डा. सुभाष आशुतोष, महानिदेशक,डा वीबी माथुर, ओमकार सिंह, एससी गैरोला, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान, अरूण सिंह रावत उपस्थित रहे।

वनों से आम आदमी को प्रभावी रूप में जोडने के लिए पुर्नविचार जाने का आह्वान

THE PIONEER
20-03-2019

Need to act for forest conservation: Bhatt

PNS ■ DEHRADUN

Unless the reasons and consequences of destruction of the forests are brought into focus, a transformative thinking cannot be formed. Noted environmentalist and Chipko movement leader Chandi Prasad Bhatt said this while delivering the keynote address at the International Day of Forests programme at Forest Research Institute (FRI) here on Tuesday.

Addressing the gathering, Bhatt said that the role of forests has increased manifolds given the pressure of rising population and associated developmental activities. "We have perhaps forgotten our age old traditional relations with the forests and hence there is an urgent need to revive it. Educating the common man has become imperative for this purpose," he said. The Government of India, Forest departments and institutions like Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) and FRI should organise more such events to educate and sensitise people for conservation and effective policy should be in place to enhance the income of the tribals and forest dependent communities, added Bhatt.

Speaking as the chief guest, Ministry of Environment, Forests and Climate Change secretary CK Mishra stressed on the need to rethink and initiate actions for educating the common man for their effective linking to the forests and to make hassle free approach of the government towards sustainable utilisation of forests. Awareness should not only be confined to the community in and around the forests but should also be created outside the forests, he added. Appreciating the efforts of entire forestry fraternity in India, including people growing trees on land outside the forests for increasing the forest cover, he emphasised the need for concerted and consolidated efforts by all for enhancing the quality and productivity of the forests. He advocated confluence of the traditional knowledge and science, evolving a workable framework and educating the people to overcome related issues.

Speaking on the occasion, the ICFRE director general SC Gairola presented an overview of the efforts and resources of the ICFRE for promoting forestry research, education and extension in tackling theproblems afflicting the forests. He also urged all those connected with forestry to introspect about the course of the journey and take stock of challenges lying ahead, in spite of numerous scientific and technological advances made in forestry.

MoEFCC ADG Saibal Dasgupta, Forest Survey of India director general Subhash Ashutosh, and FRI director Arjun Singh Rawat were also among those present on the occasion.

TIMES OF INDIA
20-03-2019

Need to introduce forestry in school curriculum: Expert

Dehradun: To mark International Day of Forests (which is on March 21), Indian Council of Forestry Research & Education (ICFRE) on Tuesday held an event at the Forest Research Institute (FRI) in line with this year's United Nations chosen theme — Forestry and Education: Learn to Love Forests.

The programme, which was graced by environmentalists and scientists from across the country, aimed to promote the importance of education at all levels in achieving the goals of sustainable forest management and biodiversity conservation.

Leading environmentalist and Padma Bhushan awardee Chandi Prasad Bhatt, who was the keynote speaker of the event, stressed that there is a need for introducing forestry in the school curriculum.

The programme was presided over by chief guest C.K Mishra, secretary, Union environment ministry.

He urged the youth to come forward with an innovative strategy to help India achieve its carbon sink target. **Shivani Azad**

Road Surcharge of ₹2

Road Surcharge of Rs. 2 is applicable on this edition for all the locations except Dehradun, Mussoorie, Rishikesh, Haridwar, Roorkee, Saharanpur, Nainital, Haldwani and Rudrapur cities. This surcharge will be in addition to the regular cover price printed on the masthead.

GARHWAL POST
20-03-2019

International Day of Forests 2019 celebrated at FRI

Educate common person on sustainable utilisation of forests: CK Mishra

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 19 Mar: The national level celebration of the 'International Day of Forests 2019' was organised by the Indian Council of Forestry Research & Education (ICFRE) at the Convocation Hall of the Forest Research Institute (FRI), Dehradun here, today, on behalf of Union Ministry of Environment, Forests and Climate Change (MoEF&CC).

The United Nations has chosen 'Forestry and Education: Learn to Love Forests' as this year's theme to promote the importance of education at all levels in achieving the goals of sustainable forest management and biodiversity conservation. The Chief Guest on the occasion was CK Mishra, Secretary, MoEF&CC, while the keynote speaker was Padma Bhushan awardee Chandi Prasad Bhatt. Also present were Saibal Dasgupta, ADG (FC), MoEF&CC; Dr Subhash Ashutosh, Director General, Forest Survey of India; Dr VB Mathur, Director, Wildlife Institute of India; Omkar Singh, Director, IGNFA; Dr SC Gairola, Director General, ICFRE; and Arun Singh Rawat, Director, FRI. The event was also joined by several organisations of MoEF&CC like ICFRE, FRI, IGNFA, Directorate of Forest Education (DFE), CASFOS, FSI, WII, BSI, ZSI; Regional Office of the MoEF&CC at Dehradun, the IIFM, Bhopal; and the Uttarakhand Forest Department, as well as the Kendriya Vidyalaya Sangathan, Dehradun.

Saibal Dasgupta ADG (FC), MoEF&CC, highlighted the ministry's commitment to striking a rational balance between environmental conservation and economic growth.

Congratulating ICFRE on hosting the 'International Day of Forests' celebration and highlighting the significance of the event, Chief Guest CK Mishra, advised rethinking and initiating actions on educating the common person for effective linking to the forests and a hassle free approach of the government towards sustainable utilisation of forests. Awareness was not only to be confined to the community in and around the forests, but also created outside the forests, he added. Appreciating the efforts of the entire forestry fraternity in India, including people growing trees on land outside the forests for increasing the forest cover, he emphasised the need for concerted and consolidated efforts from all to enhance the quality and productivity of forests. He advised bringing together traditional knowledge and science, evolving a workable framework, and educating the people overcome these issues.

Chandi Prasad Bhatt stated that the role of forests had increased manfold given the pressure of rising population and associated developmental activities, and urged transformative thinking on the issue. He said there was urgent need to revive the age old traditional relations with the forests. Educating the common man had become imperative from this perspective. He sought effective policies to enhance the income of the tribals and forest dependent communities.

Presenting an overview of the efforts and resources of the ICFRE for promoting forestry research, education and extension in tackling the problems afflicting the forests, Dr SC Gairola urged all those connected with forestry to introspect on the journey and take stock of challenges lying ahead.

Guest Speakers Dr Subhash Ashutosh, Dr VB Mathur and Omkar Singh also addressed the gathering.

Two publications – a Coffee Table Book, titled 'Nature's Kaleidoscope: Biodiversity of New Forest Campus' and 'Scientists of ICFRE: Biodata' were released by the Chief Guest. Five scientists - Dr Girish Chandra, Dr Vineet Kumar, Dr SS Chauhan, Dr Pankaj Agarwal, Dr Madhumita Dasgupta from ICFRE and Dr A Arunachalam from ICAR were awarded ICFRE awards for excellence in forestry - 2018. Prizes were also given to the winners of painting and essay competitions to the students of Dehradun based Kendriya and Navodaya Vidyalayas, photography competition for various forestry organisations and debate competition for FRI Deemed to be University students. The vote of thanks was proposed by Arun Singh Rawat.

An exhibition was also organised at the Mango Grove. Various forest products, eco-friendly technologies, publications, artifacts, organic produce and other livelihood options promoted by NGOs and Government organisations/ departments were showcased. There was ceremonial planting by the dignitaries at the Botanical Garden of the institute. The event was anchored by Dr Manisha Thapliyal.

THE HAWK
20 March, 2019

National Level Celebration Of The 'International Day

Dehradun: National level celebration of the 'International Day of Forests 2019' was organized by theIndian Council of Forestry Research & Education (ICFRE) in the Convocation Hall of the Forest Research Institute (FRI), Dehradun on Tuesday, 19 March 2019 on behalf of Ministry of Environment, Forests and Climate Change (MoEF&CC), Govt. of India. United Nations chosen theme of the event was 'Forestry and Education: Learn to Love Forests' aiming to promote the importance of education at all levels in achieving the goals of sustainable forest management and biodiversity conservation. . The programme was presided by Chief Guest, Shri C.K Mishra, Secretary, MoEF&CC, graced by renowned environmentalist and keynote speaker Padma BhushanShriChandi Prasad Bhatt and attended by ShriSaibalDasgupta, ADG (FC), MoEF&CC; Dr. SubhashAshutosh, Director General, Forest Survey of India; Dr V.B. Mathur, Director, Wildlife Institute of India; ShriOmkar Singh, Director, IGNFA; Dr S.C. Gairola, Director General, ICFRE; and ShriArun Singh Rawat, Director, FRI. The event was also joined by several organizations of MoEF&CC like ICFRE, FRI, IGNFA, Directorate of Forest Education (DFE), CASFOS, FSI, WII, BSI, ZSI; Regional Office of the MoEF&CC at Dehradun, and IIFM, Bhopal; and The Uttarakhand Forest Departmentand ,KendriyaVidyalayaSangathan, Dehardun.

Welcoming the Chief guest and other dignitaries, Shri Saibal Dasgupta ADG (FC), MoEF&CC, highlighted the ministry's commitment to strike a rational balance between environmental conservation and economic growth and activities going on in this direction.

Congratulating the ICFRE to host the 'International Day of Forests' celebration and highlighting the significance of the 'International Day of Forests, Chief Guest of the programme Shri C K Mishra, Secretary, MoEF&CC called upon to rethink and initiate actions for educating the common man for their effective linking to the forests and to make hassle free approach of the government towards sustainable utilization of forests. Awareness should not only be confined to the community in and around the forests but should also be created outside the forests, he added. Appreciating the efforts of entire forestry fraternity in India, including people growing trees on land outside the forests for increasing the forest cover, he emphasized the need of concerted and consolidated efforts from all for enhancing the quality and productivity of the forests. He advised to make a confluence of the traditional knowledge and science, evolve a workable framework, and educate the people to overcome these issues. .

Expressing his pleasure to celebrate the International Day of Forests at FRI, and appreciating the long association of the ICFRE and FRI in his efforts for saving of trees, renowned environmentalist and Padma Bhushan ShriChandi Prasad Bhatt stated that the role of forests has increased many folds given the pressure of rising population and associated developmental activities, and urged unless the reasons and consequences of destruction of the forests are brought into focus, a transformative thinking cannot be formed. He apprehended that we perhaps have forgotten our age old traditional relations with the forests and hence there is an urgent need to revive it. Educating the common man has become imperative in this perspective. Government of India, Forest Departments and institutions like ICFRE and FRI should organize more such events to educate and sensitize people fo conservation and effective policy should be in place to enhance the income of the tribals and forest dependent communities. Presenting an overview of the efforts and resources of the ICFRE for promoting forestry research, education and extension in tackling the problems afflicting the forests, Dr. S.C. Gairola, Director General, ICFRE urged to introspect all those connected with the forestry about the course of the journey and take stock of challenges lying ahead, inspite of numerous scientific and technological advances made in forestry. The occasion was also addressed by the guest Speakers Dr. Subhash Ashutosh, Dr. V.B. Mathur and Sh. Omkar Singh.

Two publications namely 'Coffee Table Book' titled ' Nature's Kaleidoscope: Biodiversity of New Forest Campus' and 'Scientists of ICFRE: Biodata' were released by the chief guest. Five scientists namely Dr. Girish Chandra, Dr. Vineet Kumar, Dr. S.S. Chauhan, Dr. PankajAgarwal, Dr. Madhumita Dasgupta from ICFRE and Dr. A. Arunachalam from ICAR were awarded ICFRE awards for excellence in forestry -2018. Prizes were also given to the winners of painting and essay competition for the students of Dehradun based Kendriya and NavodayaVidyalayas, photography competition for various forestry organizations and debate competition for FRI Deemed to be University students. The programme ended with the vote of thanks proposed by Shri Arun Singh Rawat. On this occasion an exhibition was also organized at Mango Grove, which was inaugurated by the chief guest. In this exhibition various forest products, eco-friendly technologies, publications, artifacts, organic produce and other livelihood options promoted by NGOs & Govt. organizations/ departments were showcased. To mark this International Day of Forests 2019, a ceremonial planting by the distinguished dignitaries was also done at Botanical Garden of the institute. Anchoring of the programme was done by Dr. Manisha Thapliyal.

HINDUSTAN TIMES
20-03-2019

No permission to be given for Kandi road via Corbett: Secy

PLEA Centre, NTCA had filed affidavit in NGT opposing construction through the reserve

Suparna Roy
suparna.roy@htlive.com

DEHRADUN: A week after the National Green Tribunal asked the state government to follow the road alignment approved by the Supreme Court in 2005 for the Kandi Road project, the secretary, ministry of environment, forest and climate change, said the Centre has not approved any road construction project through the core area of Corbett Tiger Reserve till now.

The secretary said this at an event on the International Day of Forest at the Forest Research Institute, Dehradun.

"No permission has been given yet to anyone regarding the Kandi Road Project and no such permission will be given in future," said CK Mishra, secretary, MoEFCC. The union environment ministry along with National Tiger Conservation Authority in November 2018 had filed a joint affidavit in the NGT opposing the construction through the core area of Corbett.

MISHRA SAID THE NEED OF THE HOUR IS TO UNDERSTAND HOW TO ADD VALUE TO FORESTS ALONG WITH FOCUS ON CONSERVATION AND REGENERATION

Secretary, union ministry of environment, forest and climate change, CK Mishra presents an award to a scientist during a programme on the International Day of Forests in Dehradun on Tuesday. HT PHOTO

Further, addressing the gathering on the occasion of International Day of Forest, Mishra said said that the government should not live in a mode of denial of forests not being affected due to development, but rather accept the reality and work towards sustainable development.

"We are known as custodians of forests, but in reality awareness needs to be spread among people from within our community also," said Mishra.

He added that the need of the hour is to understand how to add value to forests along with focus on conservation and regeneration of forests.

Environmentalist Chandi Prasad Bhatt, who was the keynote speaker at the event, said, "Degeneration of forests has been worrying all of us (environmentalists) for the past many years now. To achieve a civilised world, we humans have ourselves destroyed our forests."

Bhatt further said that after agriculture, forest and environment should be given utmost importance by the central government.